सत्संग परम संत पुष्करदयाल जी महाराज

दुर्गापुर, दिनांक 5 जुलाई 2015

!! राधा–स्वामी.!!

गुरू से प्रेम करना कोंई आसान काम नही है, हर कोई गुरू से प्रेम नही कर सकता है। सब संसार में फँसे हुए हैं और जो संसार में फँसा हुआ है वो गुरू से प्रेम नही कर सकता। गुरू कहता है तुम जब मेरे साथ चल सकते हो, जब तुम संसार से उदास हो जाओगे। संसार से उदास होने का मतलब है जब आप संसार से तृप्त हो जाओगे और तुमको संसार की कोई जरूरत ही नही पडेगी, तब तुम मेरे पास आ सकते हो और मेरे पास आने से क्या होगा? मुझसे प्रेम हो जाएगा, प्रेम ऐसे ही नही हो जाएगा, जब तुम गुरू के 100 प्रतिशत शरणागत् हो जाओगे फिर आपको गुरू से प्रेम हो जाएगा और फिर सारी जिम्मेवारी गुरू की हो जाती है फिर तुम गुरू की मौज में रहते हो, तुम्हारे अंदर एक परिर्वतन आ जाएगा ऊपर (सिर) से लेकर नीचे (पैरों) तक, तुम्हारे सोचने का ढंग बदल जाएगा, तुम्हारे देखने का ढंग बदल जाएगा, तुम्हारे बात करने का ढंग बदल जाएगा, तुम्हारा व्यवहार बदल जाएगा, तुम एक नए आदमी बन जाओगे। तुम्हारे साथ एक बहुत बडा परिर्वतन हो जाएगा, तुम्हारी सारी इच्छाएँ खत्म हो जांएगी, जब तुम्हारी सारी इच्छाएँ खत्म हो जांएगी, You Are God, फिर गुरू ने तुमको अपने जैसा बना दिया। तुम दुखी अपनी इच्छाओं की वजह से होते हो, जब एक इच्छा पूरी हो गई दूसरी इच्छा करतें हो, ये इच्छाएँ खत्म नही होती, इच्छा पूरी हो गई तो हम सुखी हो जाते हैं इच्छा पूरी नही हुई तो हम दुखी हो जाते है। जो ये इच्छाएँ हैं ये ही हमारे दुखों की जड है। जब गुरू ने तुमको अपने जैसा बनाया तुम्हारी सारी इच्छाएँ खत्म हो गईं, तब क्या होता है? तब तुम्हारे मन के अंदर शांती आ जाती है, मन के अंदर शांती आ गई वही मालिक का रूप है, मालिक का रूप और कोई नही है। आप समझते हो मालिक ऊपर रहता है, वहाँ कुछ नही है। मालिक का रूप है मन में शांती। तुम्हारे मन में शांती आ गई तुमको भगवान के दर्शन हो गए। भगवान शंकर को ध्यान करते हुए दिखाते हैं और हम उनको भगवान कहते हैं, इसका मतलब क्या है? इसका मतलब है उनके मन में शांती है।

भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा अगर तुमको अंत समय में मेरा नाम याद आएगा तो तुम्हारी मुक्ति हो जाएगी, अर्जुन कहता है कृष्ण से ये तो अच्छी बात है मैं अंत समय में आपका नाम ले लूंगा और मेरी मुक्ति हो जाएगी। कृष्ण बोले ये इतना आसान नही है, जब तुमने सारी जिंदगी भगवान का नाम ही नही लिया तो तुम कैसे कह सकते हो कि अंत समय तुमको भगवान का नाम याद आ जाएगा। तुमको भगवान का नाम लेने का अभ्यास करना पडेगा, तभी अंत समय में भगवान का नाम आ जाएगा।

मेरी बीबी के अंत समय में मेरी Sister उसी के पास थी। जब मेरी Sister को पता लगा कि इसका अब अंत समय आ गया है, मेरी बीबी से पूछती है क्या तुम्हारे पति को बुलाया जाए, वो कहती है नही, क्या तुम्हारे बेटे को बुलाया जाए, कहती है नही, फिर किसे बुलाया जाए? कहती है महाराज जी (शब्दानंद जी) को बुलाओ। महाराज जी के पास फोन किया, दिन के 2 बजे थे, कोई साधन नही था, वो बस में बैठे और चल पडे। वे गेट पर पहुँचे और मेरी बीबी ने दम तोड दिया। उसको पता लग गया कि महाराज जी आ गए हैं। अब अंत समय में मेरी बीबी को महाराज जी कैसे याद आ गए? क्योंकि उसने सारी उम्र गुरूओं की सेवा की है, उन्होने मानव दयाल जी महाराज की सेवा की, स्वामी जी हमारे घर में 15 साल रहे, उनकी सेवा की, फिर शब्दानन्द जी महाराज की सेवा

की। उनका जीवन गुरू की सेवा करते–2 बीता, इसलिए उनको अंत समय गुरू याद आ गया, क्यों? पति भी झूठा, बेटा भी झूठा, ना पति साथ देता है ना बेटा साथ देता है, साथ देता है सिर्फ सत्गुरू क्योंकि वो ही सच है इस संसार में बाकी सब झूठ है, सब एक–एक करके साथ छोड देते हैं सिर्फ एक सत्गुरू साथ नही छोडता, अब देखो ये जिन्दा मिसाल है, ये कोई किताबी कहानी नही है। जो हमारा साथ छोड देता है वो सब झूठ है और जो हमारा साथ नही छोडता वही एक सच है, वो है सत्गुरू, बाकी सब एक–एक करके साथ छोड देते हैं।

किसी शायर ने कहा है देखी जमाने की यारी, बिछडें सभी बारी–बारी। एक–एक करके सभी साथ छोड देते हैं, फिर क्यों भरोसा करें इन पर, पता नही कब साथ छोड देगा, क्यों ना हम उस चीज पर भरोसा करें जो हमारा साथ नही छोडेगी। हम भरोसा करते हैं माँ–बाप, बेटा– बेटी, पति–पत्नि, कार, जायदाद, धन–दौलत पर और फिर हम दुखी रहते हैं, क्यों? माँ चली गई, हम दुखी हो गए, हाय! माँ चली गई, बाप चला गया, हाय! बाप चला गया, कार थी, रोड पर एक्सीडेंट हो गया, हाय! कार चली गई, हम रोने लगते हैं, दुखों का कारण यही हैं ना हमारे। हमारे दुखों का कारण क्या है? हम जिन चीजों पर विश्वास करते हैं वो चीजें हमसे बिछुड जाती हैं, फिर हम किस पर विश्वास करें? विश्वास करो सिर्फ एक सत्गुरू पर वो हमारा साथ कभी नही छोडता। मेरी बीबी को अंत समय सत्गुरू कैसे याद आ गया और सत्गुरू (शब्दानन्द जी) भी दुर्गापुर से चल पडे, धक्के खा–खाकर और और हमारे घर के गेट के अंदर घुसे और मेरी बीबी ने दम तोड दिया, उसको सिर्फ महाराज जी का इंतजार था, जैसे उसको पता लगा कि महाराज जी आ गए हैं उसने दम तोड दिया। इससे जिन्दा मिसाल क्या चाहिए आपको, इससे हमको क्या सबक मिलता है? इससे हमको सबक मिलता है कि अंत समय में हम सत्गुरू को याद करें, लेकिन कैसे याद करें? सारे जन्म तो बेटा, बेटी करते रहे हम, सारे जीवन में हाय!–हाय! करते रहे, ये मेरा मकान, ये मेरी दुकान, ये मेरा पति, ये मेरी दौलत, ये मेरी कार, रहता कोई नही, आगे–पीछे सब एक–एक करके चलें जाते हैं। आपको ये जन्म मिला है कुछ कर्मों के कारण मिला है, आपको ये कर्म पूरे करने पडेंगे, अगर आपके घर में कोई बेटी हुई है तो उसके सारे कर्म पूरे करने पडेंगे, अगर नही करोगे तो कर्म आपको छोडेंगे नही, आपके पीछे पडेंगे अगर यहाँ नही पकडा तो आगे पकडेंगे, लेकिन पकडेंगे जरूर। लोग क्या करते हैं? जब उनके पास मुसीबत आती है, वे तांत्रिक के पास जाते हैं, तांत्रिक क्या करता है? वो आपके कर्मों को काट नही सकता है, वो आपके कर्मों को थोडा आगे खिसका देता है और हम समझते हैं कि हमारे कर्म टल गए, आपके कर्म टले नही, वो आगे चलकर आपको और भी जोर से पकडेंगे और पकडेंगे जरूर। एक चोर चोरी करता है उसको जज के पास ले जाते है, जज उसको 5 साल की सजा देता है, 4 साल के बाद उसको मौका मिलता है और वो भाग जाता है जेल से, पुलिस उसे फिर पकड कर लाती है और फिर से जज के पास ले जाती है, जज कहता है अच्छा तुम्हारी सजा 5 साल थी और तुम 4 साल के बाद भाग गए, ठीक है अब तुम्हारी सजा 10 साल है। ये जज को आइडिया कहाँ से आया? ये आइडिया जज को अध्यात्म से आया, इसी तरह अध्यात्म में भी अगर हम अपने कर्मों से भागना चाहें तो भाग नही पाएँगे, कभी किसी तांत्रिक के पास मत जाना, अपने कर्मों को हँसी–हँसी, खुशी–खुशी भुगत लो, इसी में आपकी भलाई है, अपने कर्मों को हल्का करते जाओ और जो अपने कर्मो की टोकरी साथ लाए हैं उसे यहीं खाली करके जाओ, आगे के लिए एक भी कर्म मत रखो। महाराज जी कहते थे One Mark Less One Year More, परीक्षा में आपको पास होने के लिए 33 नम्बर चाहिए और 32 नम्बर आ गए, 1 नम्बर कम आ गया, फिर वही किताबें, फिर वही Teacher, फिर एक साल वही पापड बेलने पडेंगे, और जिसके सारे कर्म खाली हो गए उसकी रहता कोई नही, आगे–पीछे सब एक–एक करके चलें जाते हैं। आपको ये जन्म मिला है कुछ कर्मों के कारण मिला है, आपको ये कर्म पूरे करने पडेंगे, अगर आपके घर में कोई बेटी हुई है तो उसके सारे कर्म पूरे करने पडेंगे, अगर नही करोगे तो कर्म

आपको छोडेंगे नही, आपके पीछे पडेंगे अगर यहाँ नही पकडा तो आगे पकडेंगे, लेकिन पकडेंगे जरूर। लोग क्या करते हैं? जब उनके पास मुसीबत आती है, वे तांत्रिक के पास जाते हैं, तांत्रिक क्या करता है? वो आपके कर्मों को काट नही सकता है, वो आपके कर्मों को थोडा आगे खिसका देता है और हम समझते हैं कि हमारे कर्म टल गए, आपके कर्म टले नही, वो आगे चलकर आपको और भी जोर से पकडेंगे और पकडेंगे जरूर। एक चोर चोरी करता है उसको जज के पास ले जाते है, जज उसको 5 साल की सजा देता है, 4 साल के बाद उसको मौका मिलता है और वो भाग जाता है जेल से, पुलिस उसे फिर पकड कर लाती है और फिर से जज के पास ले जाती है, जज कहता है अच्छा तुम्हारी सजा 5 साल थी और तुम 4 साल के बाद भाग गए, ठीक है अब तुम्हारी सजा 10 साल है। ये जज को आइडिया कहाँ से आया? ये आइडिया जज को अध्यात्म से आया, इसी तरह अध्यात्म में भी अगर हम अपने कर्मों से भागना चाहें तो भाग नही पाएँगे, कभी किसी तांत्रिक के पास मत जाना, अपने कर्मों को हँसी–हँसी, खुशी–खुशी भुगत लो, इसी में आपकी भलाई है, अपने कर्मों को हल्का करते जाओ और जो अपने कर्मो की टोकरी साथ लाए हैं उसे यहीं खाली करके जाओ, आगे के लिए एक भी कर्म मत रखो। महाराज जी कहते थे One Mark Less One Year More, परीक्षा में आपको पास होने के लिए 33 नम्बर चाहिए और 32 नम्बर आ गए, 1 नम्बर कम आ गया, फिर वही किताबें, फिर वही Teacher, फिर एक साल वही पापड बेलने पडेंगे, और जिसके सारे कर्म खाली हो गए उसकी रहता कोई नही, आगे–पीछे सब एक–एक करके चलें जाते हैं। आपको ये जन्म मिला है कुछ कर्मों के कारण मिला है, आपको ये कर्म पूरे करने पडेंगे, अगर आपके घर में कोई बेटी हुई है तो उसके सारे कर्म पूरे करने पडेंगे, अगर नही करोगे तो कर्म आपको छोडेंगे नही, आपके पीछे पडेंगे अगर यहाँ नही पकडा तो आगे पकडेंगे, लेकिन पकडेंगे जरूर। लोग क्या करते हैं? जब उनके पास मुसीबत आती है, वे तांत्रिक के पास जाते हैं, तांत्रिक क्या करता है? वो आपके कर्मों को काट नही सकता है, वो आपके कर्मों को थोडा आगे खिसका देता है और हम समझते हैं कि हमारे कर्म टल गए, आपके कर्म टले नही, वो आगे चलकर आपको और भी जोर से पकडेंगे और पकडेंगे जरूर। एक चोर चोरी करता है उसको जज के पास ले जाते है, जज उसको 5 साल की सजा देता है, 4 साल के बाद उसको मौका मिलता है और वो भाग जाता है जेल से, पुलिस उसे फिर पकड कर लाती है और फिर से जज के पास ले जाती है, जज कहता है अच्छा तुम्हारी सजा 5 साल थी और तुम 4 साल के बाद भाग गए, ठीक है अब तुम्हारी सजा 10 साल है। ये जज को आइडिया कहाँ से आया? ये आइडिया जज को अध्यात्म से आया, इसी तरह अध्यात्म में भी अगर हम अपने कर्मों से भागना चाहें तो भाग नही पाएँगे, कभी किसी तांत्रिक के पास मत जाना, अपने कर्मों को हँसी–हँसी, खुशी–खुशी भुगत लो, इसी में आपकी भलाई है, अपने कर्मों को हल्का करते जाओ और जो अपने कर्मो की टोकरी साथ लाए हैं उसे यहीं खाली करके जाओ, आगे के लिए एक भी कर्म मत रखो। महाराज जी कहते थे One Mark Less One Year More, परीक्षा में आपको पास होने के लिए 33 नम्बर चाहिए और 32 नम्बर आ गए, 1 नम्बर कम आ गया, फिर वही किताबें, फिर वही Teacher, फिर एक साल वही पापड बेलने पडेंगे, और जिसके सारे कर्म खाली हो गए उसकी मुक्ति। भागवत में लिखा है जब कृष्ण ने कंश को मारा तो कंश की मुक्ति हो गई, कैसे हो गई मुक्ति? कृष्ण ने हजारो लाखो आदमी मार दिए, क्या सबकी हो गई मुक्ति? सबकी मुक्ति नही हुई, लेकिन कंश की मुक्ति क्यों हो गई? भागवत में लिखा है जब कंश को पता लगा कि कृष्ण मेरी मुत्यु है तो हर समय उसको कृष्ण का ध्यान था, 24 घण्टे उसको कृष्ण का ध्यान था कि कब कृष्ण आएगा और मुझे मारेगा, तो 24 घण्टे उसे गुरू का ध्यान था, वही कारण है उसकी मुक्ति हो गई। हमारे कर्म कैसे छूटेगें? अगर हम भी सत्गुरू को 24 घण्टे अपने ध्यान में रखते हैं तो अंत समय में अपने आप ही सत्गुरू का ध्यान आएगा और हमारी मुक्ति हो जाएगी।

शब्दानन्द जी महाराज कहते थे, जब हमारा अंत समय आता है, हमारे सामने एक रील चलती है और जब वो रील चलती है तो हमारी आँखों से आँशू टपकने लगते हैं, अरे मैने अपनी जिन्दगी में क्या किया? कौडी के भाव मैंने अपनी जिन्दगी को बेच दिया, शब्दानन्द जी महाराज हर सत्संग में यही कहते थे। अगर हम सारी जिंदगी सत्गुरू का नाम लें तो हमारी आँखों में कोई आँशू नही आएगा उस टाईम और हम हँसते–हँसते चले जाएँगे और हमारी मुक्ति हो जाएगी, क्यों? क्योंकि सत्गुरू का नाम लेते–लेते हमारे सारे कर्म कटते गए और हमारे कर्मों की टोकरी खाली होती गई। तो इस जन्म–मरण की चककी से छूटने का एक ही तरीका है सत्गुरू का नाम जपो, 2–2 घण्टे, 2½ –2½ बैठते हो ध्यान में, स्वार्थी हो तुम, तुम अपना भला चाहते हो, इससे अच्छा है 2½ घण्टा आँख खुली रखो सत्गुरू का ध्यान रखो और किसी का भला करो, किसी प्यासे को पानी पिलाओ, किसी भूखे को खाना खिलाओ, किसी नंगे को कपडे पहनाओ, तो वो समय तुम कमाओगे, बाकी 2½ घण्टे ध्यान में बैठकर तुम क्या करोगे? स्वार्थी हो तुम सिर्फ अपना ही भला चाहते हो, अरे ओरो का भी भला करो, अगर ओरों का भला करोगे तो तुम्हारी तरक्की और भी जल्दी हो जाएगी। खुली आँख से ध्यान करो, खुली आँख से दर्शन करो, कैसे?

नही रूप कोई, हैं सब रूप तेरे।

सब उसी का रूप हैं, खुली आँख से सबके दर्शन करो और सबका भला करो, किसी का दिल मत दुखाओ, किसी को तकलीफ मत दो और इस तरह तुम्हारे कर्म कटते जाएंगे।

।। राधा–स्वामी।।